वर्तनी

वर्तनी को उर्दू में 'हिज्जे' और अंग्रेजी में 'Spelling' कहा जाता है। जिस शब्द में जितने वर्ण या अक्षर जिस अनुक्रम में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उसी क्रम में लिखना ही 'वर्तनी' है।

हम वर्तनी-संबंधी कुछ जानकारियों का अभ्यास करेंगे। उन्हें लिखते एवं बोलते समय मनन करने से वर्तनी-दोष निश्चित रूप से दूर हो जाएगा-

वर्णों की लिखावट में सावधानी :

- 'ख' को 'रव' की तरह न लिखें इससे 'ख', 'रव' बनकर वर्ण से शब्द बन जाएगा और अर्थ हो जाएगा- दाना। जैसे रवादार (दानेदार)
- 'घ' पर पूरी शिरोरेखा होती है जबकि 'त' वर्गीय व्यंजन 'ध' का पूर्व का गोलवाला शिरा मुड़ा होता है और मुड़े भाग तथा शिरोरेखा के बीच रिक्त स्थान रहता है।
- इसी तरह थ, भ, य, श, क्ष और श्र की लिखावट में ऊपर से मुड़े भाग के ऊपर शिरोरेखा नहीं होती। भ के ऊपर पूरी तरह से शिरोरेखा देने से 'म' का भ्रम पैदा हो सकता है।
- निम्नांकित संयुक्ताक्षर एवं इन संयुक्ताक्षरों का जिन शब्दों में उपयोग हुआ है, ऐसे शब्दों का अध्ययन कीजिए।
  - द् + व = द्व - विद्वान, द्वार
  - द् + द = द्द - तद्दन, राजगद्दी
  - द् + म = द्म - पद्म, छद्म
  - द् + य = द्य - पद्य, विद्या
  - द् + ध = द्ध - युद्ध, प्रसिद्ध
  - द् + घ = द्घ - उद्घाटन, उपोद्घात
  - ह् + य = ह्य - बाह्य, सह्य
  - ह् + ऋ = ह्र - ह्रदय, अपह्रत
  - श् + र = श्र - श्रवण, श्रेष्ठ
  - ट् + र = ट्र - राष्ट्र, ट्रक
- संयुक्ताक्षरों का प्रयोग हुआ हो, ऐसे अन्य शब्द अपनी किताब

अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु :

पूर्ण अनुस्वार	अर्ध-अनुस्वार (चन्द्रबिन्दु)
अंत	आँत
गंध	गाँव
तंतु	ताँत
दंभ	दाँत
पंच	पाँच
हंस	हँसी

- ऊपर दिये गए उदाहरणों में अंत, दंभ, पंच इत्यादि में जिस चिह्न (.) का प्रयोग किया गया है उसे 'अनुस्वार' कहते हैं; और आँत, दाँत, पाँच इत्यादि में जिस चिह्न (ँ) का प्रयोग हुआ है, उसे अर्ध-अनुस्वार या चन्द्रबिन्दु कहते हैं।

पूर्ण अनुस्वार ङ्, ञ्, ण्, न् और म इन अनुनासिक पंचम वर्णों की सहायता से भी लिखा जाता है। इनमें से प्रत्येक अपने वर्ग के अक्षरों के साथ संयुक्त वर्ण के रूप में प्रयुक्त होता है:-

क ख ग ध .... के साथ .... ङ

च छ ज झ .... के साथ .... ञ

ट ठ ड ढ .... के साथ .... ण

त थ द ध .... के साथ .... न

प फ ब भ .... के साथ .... म

पूर्ण अनुस्वार दो तरह से लिखा जाता है। उसके लिखने की दोनों रीतें निम्नांकित हैं :-

वर्ग के अंतिम अनुनासिक वर्ग के साथ	अनुस्वार के चिह्न के साथ
शङ्कर, शंङ्ख - ङ्	शंकर, शंख
अञ्जन, चञ्चल - ञ्	अंजन, चंचल
घण्टा, डण्डा - ण्	घंटा, डंडा
चन्दन, सन्त - न्	चंदन, संत

अर्धानुस्वार का उच्चारण पूरे अनुस्वार की अपेक्षा कोमल और हल्का होता है। इसे पूरे अनुस्वार की भाँति अनुनासिक वर्ण के साथ नहीं लिखा जा सकता। उदाहरण के लिए 'अंत' को हम 'अन्त' लिख सकते हैं, पर 'आँख' को 'आन्ख' नहीं लिख सकते। अतएव जहाँ अनुस्वार का उच्चारण कोमल हो और जिसे ङ्, ञ्, ण् न् और म् आदि अनुनासिक संयुक्त वर्णों से न लिखा जा सके वहाँ अर्धअनुस्वार समजना चाहिए और उसे चन्द्रबिन्दु के साथ लिखना चाहिए।

शिरोरेखा के ऊपर लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर सामान्यतया 'अनुस्वार' तथा नीचे लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होता है। जैसे-

शिरोरेखा के ऊपर	शिरोरेखा के नीचे
मैं, क्यों, हैं, उन्हें, उन्होंने, इन्हें, इन्होंने, किन्हें, किन्होंने, जिन्हें, जिन्होंने	कहाँ, आँगन, अँगना, जहाँ, गाँधी, आँधी, आँख, जाँघ, माँद, नाँद, बाँध, काँख

'श', 'ष' एवं 'स' का प्रयोग :

- यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पहले 'अ' या 'आ' हो तो 'स' नहीं बदलता।

  जैसे - दस ('स' के पहले 'अ')

  पास, घास, विश्वास, इतिहास ('स' के पहले 'आ')
- यदि अ/आ से भिन्न स्वर रहे तो 'ष' का प्रयोग होता है।

  जैसे - प्रेषित, आकर्षित, विषम, भूषण, आकर्षण, हर्षित, धनुष आदि।
- 'ह' वर्ग के पूर्व 'ष' का प्रयोग होता है।

  जैसे - क्लिष्ट, विशिष्ट, नष्ट, कष्ट, भ्रष्ट, षडानन, षोडश आदि।
- 'ऋ' के बाद 'ष' का प्रयोग होता है।

  जैसे - ऋषि, कृषि, वृष्टि, कृषक, तृषित, ऋषभ आदि।

- आगे 'च' वर्ग रहने पर 'श' का प्रयोग होता है।

  जैसे - निश्चित, निश्चय, निश्छल आदि।

- यदि 'श' एवं 'ष' दोनों का साथ प्रयोग हो तो पहले 'श' फिर 'ष' का प्रयोग होगा। यदि 'स' भी रहे तो क्रमशः स, श और ष होगा।

  जैसे - विशेष, शेष, शोषण, शीर्षक, विश्लेषण, संश्लेषण आदि।

क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ का प्रयोग :

क़तल	ख़बर	ग़रीब	ज़माना	फ़कीर
क़दम	ख़र्च	ग़लत	ज़मीन	फ़र्ज
क़द्र	ख़ानदान	ग़ाफिल	ज़हर	फ़रमान
क़लम	ख़ुदा	गुस्सा	ज़िन्दगी	फ़रेब
क़ाबिल	ख़ुश	ग़ैर	नमाज़	फ़ुरसत

ऊपर दिये गए उदाहरणों को ध्यान से देखें। इनमें क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ के बगल में नुक्ता या बिन्दी लगाई गई है। इन शब्दों के बगल में बिन्दी केवल इनके उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए लगाई जाती है। अरबी-फ़ारसी भाषा के इन शब्दों में निर्देशित वर्णों का उच्चारण कोमल और हल्का होता है।

ड़ और ढ़ का प्रयोगः

(1)	डमरु	अकड़	(2)	ढंग	गढ़
	डर	बड़ाई		ढब	पढ़ाई
	डाक	रणछोड़		ढेरी	बाढ़
	डाली	झाड़		ढोल	सीढ़ी

ऊपर दिये गए नं. (1) और (2) के शब्दों को ध्यान से पढ़िए । नुक्तावाले इन 'ड़' और 'ढ़' के संबंध में यह बात याद रखनेलायक है कि दोनों अक्षर कभी शब्द के शुरु में और अनुस्वार के बाद नहीं आते।

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के उदाहरणः

(1) 'इ' की जगह 'ई' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
ईस	इस	फीर	फिर
कीस	किस	रीहा	रिहा
जीस	जिस	लीया	लिया
चाहीए	चाहिए	बहीन	बहिन
नीकट	निकट	वीकट	विकट
कोशीश	कोशिश	विदीत	विदित
गीरना	गिरना	मीलना	मिलना
कठीनाई	कठिनाई	विकसीत	विकसित

(2) 'ई' की जगह 'इ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
चिज़	चीज़	सति	सती
नारि	नारी	स्त्रि	स्त्री
निंद	नींद	महिना	महीना

निचे	नीचे	यक़िन	यक़ीन
पिछे	पीछे	विनति	विनती
क़िमत	क़ीमत	शरिर	शरीर
तिसरा	तीसरा	गृहिणि	गृहिणी
बिमार	बीमार	स्विकार	स्वीकार
नज़दिक	नज़दीक	हारजित	हारजीत

(3) 'ऊ' की जगह 'उ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तुने	तूने	भुल	भूल
दुध	दूध	सुर्य	सूर्य
पुज्य	पूज्य	शुरु	शुरू
उपर	ऊपर	हिन्दु	हिन्दू
क़ानुन	क़ानून	मालुम	मालूम
दुसरी	दूसरी	मज़मुन	मज़मून
पुछना	पूछना	महसुस	महसूस
फ़िजुल	फ़िजूल	प्रतिकुल	प्रतिकूल
जरुरत	जरूरत	गोमुत्र	गोमूत्र

(4) 'उ' की जगह 'ऊ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तूम	तुम	पूजारी	पुजारी
तूम्हारा	तुम्हारा	सूख	सुख
पहूँचना	पहुँचना	सचमूच	सचमुच

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के निर्देशित उदाहरणों के अलावा कुछ और भूलों के उदाहरण और उनसे बचने के सामान्य नियम निम्नांकित हैं:

(1) जब संयुक्ताक्षर के अंत्य स्वर पर भार हो तो उसके

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कूत्ता	कुत्ता	कीश्ती	किश्ती
गूच्छा	गुच्छा	चीट्ठी	चिट्ठी
बील्ली	बिल्ली	नूस्खा	नुस्खा
सूस्त	सुस्त	लूत्फ़	लुत्फ़

(2) ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन के रूपों में दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' में बदल जाती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
थालीयाँ	थालियाँ	दासीयाँ	दासियाँ
ज़िन्दगीयाँ	ज़िन्दगियाँ	पोथीयाँ	पोथियाँ
टोपीयाँ	टोपियाँ	सदीयाँ	सदियाँ

(3) संस्कृत से आये हुए तत्सम शब्दों की अंत्य 'ति' अधिकतर ह्रस्व होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
गती	गति	मती	मति
पती	पति	रीती	रीति
भक्ती	भक्ति	स्थिती	स्थिति

(4) श्रेष्ठतावाचक शब्दों का प्रत्यय 'इष्ट' की जगह 'इष्ठ' होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कनिष्ट	कनिष्ठ	धर्मिष्ट	धर्मिष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ	बलिष्ट	बलिष्ठ
जयेष्ट	ज्येष्ठ	श्रेष्ट	श्रेष्ठ

(5) 'ईय' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
जातिय	जातीय	देशिय	देशीय
प्रांतिय	प्रांतीय	वर्षिय	वर्षीय
राजकिय	राजकीय	स्वर्गिय	स्वर्गीय

(6) सामान्यतया 'इक' प्रत्यय में 'इ' ह्रस्व होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
औद्योगीक	औद्योगिक	नैतीक	नैतिक
ऐच्छीक	ऐच्छिक	शारीरीक	शारीरिक
दैनीक	दैनिक	स्थानीक	स्थानिक

(7) सामान्यतया 'ईन' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अर्वाचिन	अर्वाचीन	प्राचिन	प्राचीन
नविन	नवीन	कुलिन	कुलीन
पराधिन	पराधीन	स्वाधिन	स्वाधीन

प्रत्यय संबंधी भूलें :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
उत्कर्षता	उत्कर्ष	ऐक्यता	ऐक्य / एकता
औदार्यता	औदार्य/उदारता	कार्पण्यता	कृपणता / कार्पण्य
गौरवता	गौरव / गुरुता	दारिद्रता	दरिद्रता / दारिद्रय
धैर्यता	धीरता / धैर्य	पौरुषत्व	पौरुष / पुरुषत्व
साम्यता	साम्य / समता	वैमनस्यता	वैमनस्य
सौजन्यता	सौजन्य / सुजनता	सौदर्यता	सुन्दरता / सौंदर्य

उपर्युक्त शब्दों के उदाहरण से पता चलता है कि, भाव प्रत्ययांत शब्दों के बाद प्रत्यय लगाना ठीक नहीं है।

हलन्त का प्रयोग :

- मान्/वान्/हान् प्रत्ययान्त शब्दों में हलन्त का प्रयोग अवश्य होना चाहिए ।
  जैसे – श्रीमान्, आयुष्यमान्, महान्, विद्वान्
- त्/मम्/उत् प्रत्ययान्त तत्सम शब्दों में हलन्त का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे – स्वागतम्, जगत्, परिषद्, पश्चात्, शरद्, सम्राट्, विद्युत् आदि।

ये दोनों प्रचलित हैं और सही भी :

दुकान	–	दूकान	उषा	–	ऊषा
अंजलि	–	अंजली	गरमी	–	गर्मी
सरदी	–	सर्दी	वरदी	–	वर्दी
तुरग	–	तुरंग	भुजग	–	भुजंग
बिलकुल	–	बिल्कुल	हलुआ	–	हलवा
विहग	–	विहंग	रियासत	–	रिआसत
आत्मा	–	आतमा	सोसाइटी	–	सोसायटी
कलश	–	कलस	मुस्कान	–	मुसकान
धबराना	–	धबड़ाना	एकत्र	–	एकत्रित
चाहिए	–	चाहिये	ग्रस्त	–	ग्रसित
दम्पती	–	दम्पति	जाए	–	जाये
पृथिवी	–	पृथ्वी	पिंजरा	–	पिंजड़ा
वशिष्ठ	–	वसिष्ठ	सामान्यतः	–	सामान्यतया

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप के सामने (3) का चिह्न लगाइए :

(क)	आविष्कार ( )	आविष्कार ( )	आविषकार ( )	आविश्कार ( )
(ख)	पूजनीय ( )	पूज्यनीय ( )	पुजनीय ( )	पुज्यनीय ( )
(ग)	सुषोभित ( )	शुसोभित ( )	सुसोभित ( )	सुशोभित ( )
(घ)	श्रंगार ( )	शृंगार ( )	श्रृंगार ( )	श्रिंगार ( )
(ङ)	स्वास्थ ( )	सवास्थ्य ( )	स्वासथ्य ( )	स्वास्थ्य ( )
(च)	कवयित्री ( )	कवियित्री ( )	कवियत्री ( )	कवियित्रि ( )

2. निम्नलिखित शब्दों में अशुद्ध वर्तनीवाले बीस शब्द हैं। उन्हें छाँटकर उनके सामने उनके शुद्ध रूप लिखिए :

नैन	पीढ़ी	उलंघन	शुरु	प्रसाद	निर्दयी	शब्दकोश
कृपया	अमावश्या	दृष्टि	उसर	ऊर्जा	एच्छिक	वंदना
सहस्त्र	एश्वर्य	डमरु	संतुष्ट	बढई	एनक	हंसमुख
दिवार	अतएव	वाटिका	पढ़ाई	पाँचवाँ	अरोग्य	उद्देश्य
लडाई	बांसुरी	बुधवार	अनधिकार	श्रीमती	सन्मुख	जाग्रति

अशुद्ध वर्तनीवाले शब्द तथा उनके शुद्ध रूप :

1.	.....	.....	10.	.....	.....
2.	.....	.....	11.	.....	.....
3.	.....	.....	12.	.....	.....
4.	.....	.....	13.	.....	.....
5.	.....	.....	14.	.....	.....
6.	.....	.....	15.	.....	.....
7.	.....	.....	16.	.....	.....
8.	.....	.....	17.	.....	.....
9.	.....	.....	18.	.....	.....

3. निम्नलिखित वाक्यों में दो-दो शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। अशुद्ध शब्दों के स्थान पर शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हुए वाक्यों को दुबारा लिखिए :

(1) गुरूजीने छात्रों को आशीर्वाद दिया।

(2) नेताजीने औजस्वी भाषण दिया।

(3) मैने प्रातकाल घास पर औस पड़ी देखी।

(4) नोकर तोलिया लेकर आया।

(5) बूड़ा सीड़ियाँ नहीं चढ़ पाया।

(6) भारत ने औद्योगिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की है।

(7) ददीचि ने धर्म की रक्षा के लिए अपनी हड्डीयाँ दे दी।

(8) व्यापार में घाटा होने के कारण वह टनटनगोपाल हो गया है।

(9) हमें दुसरों के कार्य में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिए।

(10) उसकी अलोचना सुनकर मुझे कष्ट हुआ।

●